E- ISSN No: 2395-0269

International Journal of Applied and Universal Research
Volume 2, Issue V, OCTOBER 2015 Available online at: www.ijaur.com

"महादेवी वर्मा के काव्य में बौद्ध दर्शन"

डॉ. ललिता रानी
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

सारांश – बौद्ध दर्शन के अनुसार मानव–जीवन का चरम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति है। यह 'निर्वाण' क्या है? विभिन्न विचारकों ने इसके विभिन्न उत्तर दिये हैं जिन पर विचार करते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि निर्वाण का अर्थ समस्त दुःखों से मुक्ति है। यदि व्यक्ति तृष्णाओं पर विजय प्राप्त कर ले तो वह इस जीवन में ही निर्वाण की स्थिति प्राप्त कर सकता है अन्यथा जब तक उसकी चेतना अज्ञान जन्य तृष्णाओं से मुक्त नहीं हो पायेगी तब तक वह आवागमन (पुनर्जन्म) के भव–चक्र में पड़ी हुई दुःख भोगती रहेगी। अस्तु इस जीवन में या इस जीवन के बाद अन्ततः निर्वाण प्राप्त कर लेना ही बौद्धिक साधक का चरम लक्ष्य है।

मुख्य शब्द – महादेवी वर्मा, बौद्ध दर्शन एवं निर्वाण।

1 प्रस्तावना –

महादेवी ने बाल्यावस्था में ही ब्रजभाषा में काव्य–रचना प्रारम्भ कर दी थी, किन्तु उस समय उनकी गति समस्यापूर्ति तक ही थी। जब महादेवी ने साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण किया उस समय 'प्रसादद्व 'पंत, और 'निराला, काव्याकाश में उदीयमान थे। किशोर कवयित्री मैथिलीशरण गुप्त की स्वच्छ–सरल काव्य–शैली की ओर आकृष्ट हुई। काव्य चेतना का और विकास होने पर महादेवी को छायावाद सर्वाधिक आकर्षक लगा और फिर वे उसी में रम गयी कुछ प्रारम्भिक कविताओं को छोड़कर महादेवी की सभी कविताएँ छायावादी विशेषताओं से युक्त हैं। नारी सुलभ संकोच, परिष्कृत उदात्तवृत्ति तथा दार्शनिक चिन्तन के कारण उनके काव्य में रहस्यात्मकता की अधिकता है। अपनी प्रणय भावनाओं का प्रकाशन करने के लिए उन्होंने अलौकिक बाह्य तथा विविध प्रतीकों का सहारा लिया है। नारी–सौन्दर्य अथवा श्रृंगारिक वर्णन के लिए छायावाद के प्रायः सभी कवियों ने प्रकृति का आश्रय लिया है। महादेवी के काव्य में इस विशेषता की चरम परिणति पाई पाती है।

महादेवी वर्मा बहुमुखी प्रतिभा की धनी है। साहित्य की दोनों विधाओं–गद्य और पद्य पर उनकी लेखनी का समान अधकार है। अतः दोनों धाराएँ उनके योगदान से सम्पन्न हैं। छायावाद युग की वे प्रतिनिधि कवयित्री हैं। गीतों में निबद्ध उनकी रागात्मक अनुभूतियों की सांगीतिक झंकार और कल्पना की रमणीयता सहृदय की चेतना को आल्हादित करती है।

2 विश्लेषण –

महादेवी की काव्य चेतना निरन्तर विकासोन्मुखी रही। उनकी रचनाएँ उत्तरोत्तर निखरती गयी हैं। पहले उनकी कविताएँ 'चाँद' पत्रिका में प्रकाशित होती थीं। उनकी शब्दावली तत्सम एवं पद्धति वर्णनात्मक अधिक थी। प्रौढ़ता के साथ–साथ उनके काव्य में कालक्रमानुसार इस प्रकार हैः– 'नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत और दीपशिखा'। 'सप्तपर्णा' तथा 'हिमालय' उनके द्वारा अनुदित और सम्पादित काव्य संग्रह है। महादेवी वर्मा ने निर्वाण की चर्चा बार–बार अपने काव्य में की है, जिसकी वानगी निम्नानुसार है –

पथ मेरा निर्वाण बन गया
प्रति पग शत वरदान बन गया!
पथ को निर्वाण माना। जिसके निष्फल जीवन ने
शूल को वरदान जाना जल–जल कर देखी रहें
निर्वाण हुआ है देखो वह दीप लुटा कर चाहें।

यह निर्वाण की व्याख्या भी बौद्ध मत के अनुसार की गई है। बौद्ध मतानुसार भी तृष्णाओं का निरोध करने से ही निर्वाण की स्थिति प्राप्त होती है तो महादेवी के विचारानुसार भी दीप (जीवन या व्यक्ति) अपनी चाहों (इच्छाओं) को लुटाकर ही निर्वाण प्राप्त करता है। निर्वाण की यह स्थिति इसी जीवन में प्राप्त है किन्तु जीवन के अनन्तर प्राप्त होने वाले निर्वाण की भी कवयित्री ने चर्चा की है –

बीणा होगी मूक बजाने वाला होगा अन्तर्धान;
बिस्मृति के चरणों पर आकर लौटेंगे सौ–सौ निर्वाण!

यहाँ जीवन का अवसान हो जाने पर प्राप्त होने वाली एक ऐसी स्थिति की कल्पना की गई है जो कि निर्वाण की ही नहीं – निर्वाण से भी बढ़कर होगी। उस स्थिति को उन्होंने विस्मृति की संज्ञा देते हुए निर्वाण से भी कई गुना महत्व दिया है। इसीलिए तो कहा है – "लौटें सौ–सौ निर्वाण।" ऐसी स्थिति में प्रश्न उठता है कि क्या यह विस्मृति निर्वाण की ही द्योतक है या उससे कोई भिन्न

अर्थ रखती है? फिर सौ–सौ निर्वाण से निर्वाण की अपेक्षाकृत हीनता एवं उपेक्षा का भाव भी व्यक्त होता है। ऐसी स्थिति में प्रश्न उठता है कि महादेवी की यह काव्य स्थिति विस्मृति–निर्वाण की ही द्योतक है या उससे कोई भिन्न स्थिति है? इसके समाधान के लिए हमें उपर्युक्त पंक्तियों से सम्बद्ध अगली पंक्तियों पर विचार करना होगा" –

वीणा होगी मूक बजाने बाला होगा अन्तर्धान
विस्मृति के चरणों पर आकर लौटैंगे सौ–सौ निर्वाण!
जब असीम से हो जायेगा, मेरी लघु सीमा का मेल,
देरबोगे तुम देव। अमरता खेलेगी मिटने का खेल।

इस पूरे प्रसंग से स्पष्ट है कि महादेवी निर्वाण को महत्व देती है किन्तु उससे भी बढ़कर उनके लिए असीम से अपनी लघु सीमा का मेल है। दूसरे शब्दों में, वे आत्मा और परमात्मा के मिलन को निर्वाण से अधिक महत्व देती हैं, इसीलिए उनका अन्तिम लक्ष्य निर्वाण नहीं परमात्मा से मिलन है। अतः उन्हें बार–बार हम उसी महामिलन की प्रतीक्षा करते पाते हैं –

मेरे जीवन की जागृति! देखो फिर भूल न जाना
जो वे सपना बन आते तुम चिर निद्रा बन जाना!
करुणामय को भाता है के परदों में आना
हे नभ की दीपावलियों तुम पल भर को बुझ जाना।

इतना ही नहीं अनेक प्रसंगों से यह भी स्पष्ट है कि परमात्मा का मिलन ही नहीं उनका विरह भी उन्हें निर्वाण से अधिक प्रिय है –

एक करुण अभाव में चिर –तृप्ति का संसार संचित;
एक लघु क्षण दे रहा निर्वाण के वरदान शत–शत!
पा लिया मैंने किसे इस वेदना के मधुर क्रम में?
कौन तुम मेरे हृदय में?

उनके काव्य में अद्वैत की अनुभूति अधिक गम्भीर है, पर इसका यह तात्पर्य भी नहीं है कि वे बौद्धमत के निर्वाण की सदा उपेक्षा ही करती हैं। ऐसा नहीं है। वे निर्वाण की उपेक्षा नहीं करती अपितु उसे भी अपनी जीवन पद्धति का अंग बना लेती है। बौद्धमत में निर्वाण का सबसे बड़ा लक्षण तृष्णाओं की शांति है, इच्छाओं पर विजय प्राप्त एवं भोग विलास के साधनों से विरक्ति है, इन सभी लक्षणों को महादेवी भी स्वीकार करती हैं –

"सुख की चिर पूर्ति यही है उस मधु से फिर जावे मन!
चिर ध्येय यही जलने का, ठंडी विभूति बन जाना;
है पीड़ा की सीमा यह दुःख का चिर सुख हो जाना।
यह चिर अतृप्ति हो जीवन चिर तृष्णा को मिट जाना!

बौद्धमत के व्याख्याताओं के निर्वाण को बुझे हुए दीपक या अंगारे के सदृश भी बताया है तथा उसमें वस्तुओं के बिना योग के ही उनसे विरक्ति का हो जाना आवश्यक माना है। यही ध्येय यहाँ कवयित्री ने भी स्वीकार किया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि महादेवी ने अद्वैत की अनुभूति को प्रमुखता देते हुए भी बौद्ध मत की निर्वाण सम्बन्धी कल्पना को अस्वीकार नहीं किया है, उसे भी गौण रूप में स्वीकार करते हुए दोनों में समन्वय स्थापित करने की चेष्टा की है।

3 निष्कर्ष –

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कवयित्री के मन में निश्चित ही निर्वाण की अभावात्मक स्थिति की अपेक्षा प्रणय, विरह एवं मिलन के क्षणों की अनुभूति के प्रति अधिक आकर्षण है। यही तथ्य इस बात का सूचक है कि महादेवी पर बौद्ध मत का प्रभाव उनके मस्तिष्क तक ही सीमित है, उनका हृदय तो अद्वैतमूलक रहस्यवाद की अनुभूति से आप्लावित है।

संदर्भ –

1 महादेवी साहित्य समग्र, भाग–3, पृष्ठ 132–133, कथन महादेवी वर्मा, सं. निर्मला जैन.
2 महादेवी : नया मूल्यांकन, पृष्ठ 84–85, डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त.
3 महादेवी : नया मूल्यांकन, पृष्ठ 88–89, डॉ. गणपित चन्द्र गुप्त
4 हिन्दी साहित्य कोश, भाग–1, पृष्ठ 866, सम्पादक डॉ. धीरेन्द्र वर्मा.